अध्याय 17

पत्र-लेखन

मीडिया मोबाइल के युगो में चिट्ठी भा पाती भा पत्र के जरूरत आ महत्व बनल बा। चिट्ठी भा पाती दिल के बात दोसरा से निश्छल आ बेधड़क बतला देवे वाला स्वाभाविक आउर प्रभावशाली लिखित माध्यम ह। चिट्ठी के जरिये पत्र-लेखक आ पाठक के दिल के तार जुड़ेला। दिल भावना के धारातल पर कबहुँ उतराये लागेला त कबहूँ अतल सागर में गोता लगावे ला, डूबे ला, तैरे ला। जैसे बक्सा के चाभी खोलेला ओइसहिं दिल के दुआर खोलेले चिट्ठी।

हिन्दी वैयाकरण लोगन के अनुसार पत्र तीन प्रकार के होला।

1. सामाजिक भा व्यक्तिगत पत्र-जइसे कवनो संबंधी के इहवाँ लिखल संदेश पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, शोक संदेश।
2. व्यावसायिक भा व्यापारिक पत्र-लेन-देन, क्रय-विक्रय से जुड़ल पत्र।
3. सरकारी भा कार्यालयीय पत्र-स्कूल, कॉलेज, सरकारी दफ्तर से जुड़ल आवेदन भा प्रार्थना पत्र।

भोजपुरियो में कुछ-कुछ इहे स्थिति बा। अंतर अतने बा कि व्यक्तिगत भा सामाजिक पत्र के चिट्ठी भा संदेश भा पाती भा पत्र कहल

जाला आ शेष दूनों के अर्जी भा प्रार्थना पत्र में समेट दिहल जाला। एह प्रकार से भोजपुरी में पत्र दू प्रकार के होला।

1. चिट्ठी भा पाती,

2. अर्जी भा प्रार्थना पत्र।

चिट्ठो भा अर्जी लिखल एगो कला ह। जेकरा में नीचे लिखल विशेषता होखे के चाही-

1. छोटहन बाकिर पूरा- दुनिया के रफ्तार बड़ा तेज बा। लाम-लहकर चिट्ठी पढ़े के धीरज सबके पासे नइखे। एह से चिट्ठी नपल-तुलल शब्द में लिखे के चाहीं। बाकिर अइसनों ना होखे के चाहीं कि संक्षेप के फेर में बात छोड़ दीहल जाए भा भाव के बुझौवल बना दिहल जाए।

2. प्रभावशाली-जवन भी विचार होखे ओकरा के राफ-साफ शब्द में प्रभावशाली ढंग से रखे के चाहीं, जे पढ़े वाला के प्रभावित क सके।

3. शुद्धता आ स्वच्छता-भाषा में शुद्धता आ लिखावट में सफाई होखे के चाहीं। सोच-समझ के लिखे के चाहीं, काट-छाँट से बचे के चाहीं।

4. विनम्र भाव में स्पष्ट विचार- चिट्ठी में विचार स्पष्ट होखे के चाहीं। लागेवाला बात भले काहे ना होखे, उहो विनम्र भाव से कहे के चाहीं।

5. सहज आउर स्वाभाविक भाषाशैली-पत्र के भाषा आ शैली सहज आउर स्वाभाविक होखे के चाहीं। कठिन शब्दन के प्रयोग से बच के सीधा-सादा शब्द में आपन विचार स्पष्ट रूप में आ खुल के प्रगट करे के चाहीं।

6. बाहरी सजावट-फीको पकवान ऊँचा दाम में बिका जाला, अगर दोकान ऊँचा होखे। मतलब कागज बढ़िया होखे, लिखावट सुन्दर आ साफ होखे। चिट्ठी के जरूरी अंग शीर्षक, तारीख, अदब, अनुच्छेद आ अंत अपना नियत स्थान पर आ क्रम से होखे के चाहीं। पत्र के ऊपर पता ठिकाना पूरा आ स्पष्ट होखे के चाहीं, उचित स्थान पर वाजिब दाम के टिकट लगावे के चाहीं।

चिट्ठी पतरी के अंग

चिट्ठी हाड़-मास विहीन जीवंत दूत ह। दूतरूपी मनुष्य के जैसे मोटा-मोटी सिर, गरदन, धड़ आ पैर के चार अंग में बाँटल जाला ओइसहीं पत्र के चार अंग मानल जाला। सिर के 'आरंभ', गरदन के 'अभिवादन', धड़ के 'विचार' आउर पैर के 'अभिनिवेदन' भा 'समापन' कहल जा सकेला। नीचे खिंचल आरेख के माधयम से एकरा के आसानी से समझल जा सकेला-

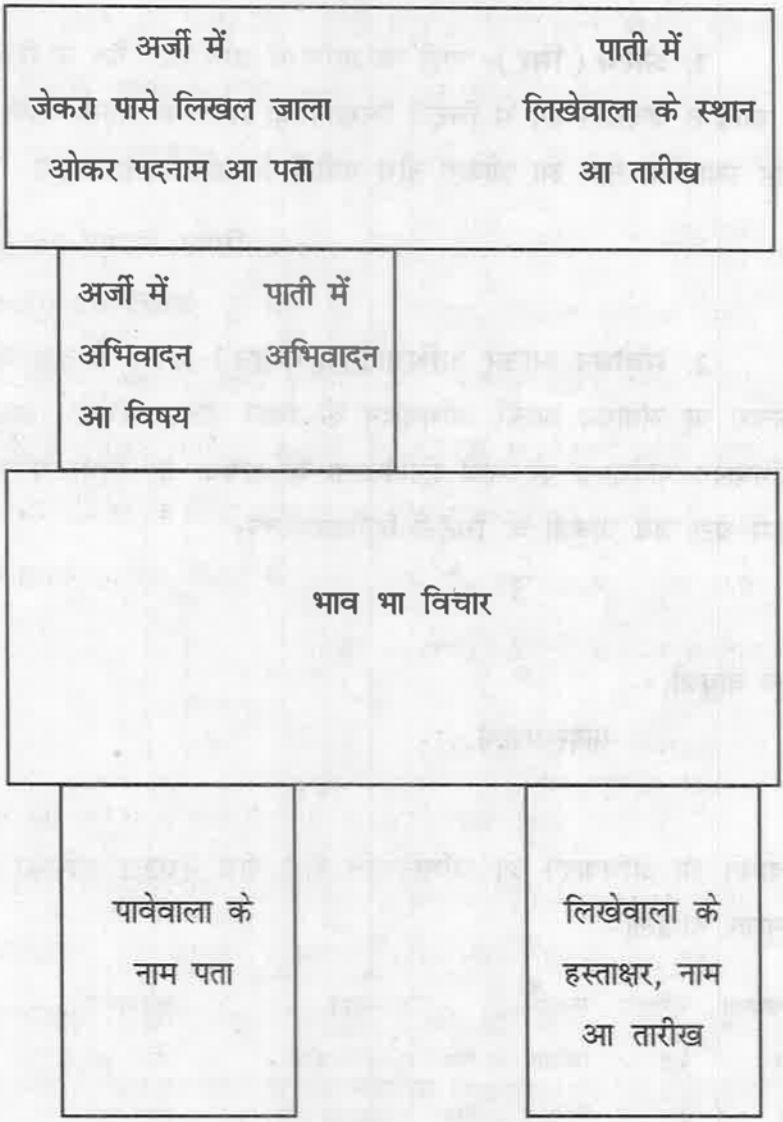
अर्जी में
जेकरा पासे लिखल जाला
ओकर पदनाम आ पता
पाती में
लिखेवाला के स्थान
आ तारीख
अर्जी में
अभिवादन
आ विषय
पाती में
अभिवादन
भाव भा विचार
पावेवाला के
नाम पता
लिखेवाला के
हस्ताक्षर, नाम
आ तारीख

अब पाती के अंगवन के बारे में तनिक विचार हो जाव-

1. **आरंभ (सिर)**- पाती के आरंभ में अगर लेटर पैड के स्थिति ना होखे त जवना स्थान से चिट्ठी लिखल जा रहल बा दहिना कोना में ओह स्थान के नाम आ ओकरा नीचे तारीख लिखल जाला। जइसे-

सिपार, सिवान-841507

तारीख-12-05-06

2. **संबोधन आऊर अभिवादन (गरदन)**-आरंभ के बाद बाँये किनारा पर संबोधन आऊर अभिवादन के स्थान होला। संबोधन आऊर अभिवादन पावेवाला के साथ लिखेवाला के संबंधा पर निर्भर करेला। जइसे-बेटा जब बाबूजी के चिट्ठी लिखिहन तब-

पूज्य बाबूजी,

सादर प्रणाम,

संबोधन आ अभिवादन आ अभिनिवेदन नीचे नीचे लिखल तालिका के अनुसार होखेला-

लिखेवाला	पावेवाला	संबोधन	अभिवादन	अभिवादन
बाप	बेटा	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीष/जीअ	तोहार बाबूजो
माई	बेटा	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीर्वाद/खुश रह	तोहर माई
बेटा	बाप	पूज्य बाबूजी	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारा पुत्र

बेटा	माई	पूजनीया माई	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारा पुत्र
बड़ भाई	छोट भाई	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीष/शुभाशीर्वाद	तोहार भइया
छोट भाई	बड़ भाई	पूज्य/श्र)य भैया	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर छोटका भाई
पति	पत्नी	प्रिये/प्राणेश्वरी	शुभाशीष	तोहार प्राणधान
पत्नी	पति	प्रियवर/प्राणेश्वर	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारी पत्नी
मित्र	मित्र	प्रिय मित्र	नमस्ते	तोहार संघतिया
छोट	बड़	आदरणीय/पूज्य	प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर.. (जे रिस्ता होखे)
		आदरणीया/पूजनीया	प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर... (जे रिस्ता होखे)
बड़	छोट	चिरंजीव / प्रिय	शुभाशीष/खुश रह	तोहार...(जे रिस्ता होखे)

3. विचार (धाड़)- पत्र के इहे मुख्य भाग ह। एह भाग में पत्र लेखक अपना दिल के बात लिखे लन। भाषा सरल आ सहज होखे के चाहीं। चमत्कार प्रदर्शन से बचे के चाहीं। बार-बार एके बात दोहरावे-तिहरावे के ना चाहीं। विचार पूर्ण होखे के चाही। विचार भरपूर आ खुलल होखे के चाहीं, भाव में गहराई भी होखे के चाहीं।

4. अंत भा उपसंहार (पैर)- पत्र के अंत में दॉया कोना में पत्र पावेवाला के साथ आपन संबंध के विनम्रता पूर्वक उल्लेख करे के चाहीं।

जइसे-

राऊर दुलरूआ

अभिषेक

नोट् :- अगर छपल-छप्पावल लेटर पैड होखे तब ऊपर बायें में प्रेषक के नाम त होखबे करेला आ दहिने में पता भी होखेला. पाती के अंत में बाये तरु पावेवाला के नाम भी लिख दिहल जाला। अगर सादा कागज पर लिखे के होखे त आरंभ के जरूरत पड़ेला।

कुछ उदाहरण

बेटा के चिट्ठी बाबूजी के नामे

रानीघाट, पटना

12.06.08

पूज्य बाबूजी,

चरण स्पर्श।

रउवा सभे के आशीर्वाद से खुशहाल बानी। शुरू-शुरू में जब इहवाँ अइनी त मने ना लागत रहे। अब कुछ संघतिया बन गइल बा, जे पढ़े-लिखे में होसियार आ मेहनती बाड़े लोग। मिलजुल के पढ़िला जा, एक दोसराके मदद खातिर सभे लोग तत्पर रहेलन। अब पढ़ाई जोर पकड़ लेले बा, नया-नया किताब खरीदे के पड़ल ह। जरूरत के अनुसार मिल-जुल के त किताब खरीद लेहनी जा, बाकिर सब किताब सबके पासे चाहीं। काम चल रहल बा। पढ़ाई करे में बहुते मेहनत करे के पड़ता। दूध फल जरूरी लागता। एह से अगिला महीना में जब खर्चा भेजब त कुछ जादे पैसा भेज देहब कि किताब खरीदा जाए आ दूधो के व्यवस्था हो जाए।

आशा करत बानी की माई ठीके होई। माई से कह देब कि इहवाँ हम आराम से बानी। कवनो परेशानी नइखे। बबुआ के भी पढ़ावे पर धयान देब। चाचा-चाची के प्रणाम आउर बबुआ-बुचियन के आशीर्वाद बोल देब।

राउर प्यारा बेटा
रवि प्रकाश

भेजेवाला
रविप्रकाश
सी.वी.रमण छात्रावास
रानीघाट, पटना-6

मिले
श्री देवानन्द प्रसाद
ग्राम-सिपार, पो0-सिंघौली
जिला-सिवान-841507

बाबूजी के चिट्ठी बेटा के नामे

सिपार
18.6.08

चि. रविप्रकाश,

खुश रह

तोहार चिट्ठी मिलल। इहवाँ सभे ठीक बा। तोहार बबुआ तोहरा के इयाद करत रहेला, अब उहो पढ़े में खूब मेहनता करता। आ कहता कि हम भइयो से जादे नंबर लाइब आ हमहूँ पटना में नाम लिखाइब। तोहार माई तोहरा पढ़ाई, खुशी आ स्वास्थ्य के चिंता करत रहेली। हमनी सब के इच्छा बा कि तू खूब पढ़। पढ़-लिख के सफल आ अच्छा इंसान बन।

पइसा-कौड़ी के कवनो चिंता मत करीह। बाकिर पइसा के बरबादी भी मत करीह। अबकी बार हम पइसा भेजब ना, हम खुद आइब। जवन-जवन किताब के जरूरत होई खरीद लिहल जाइ। दूधा-ऊल के उठवना क लिह। आइब त ओकरो हिसाब किताब क देहब। अऊर सब ठी बा। गलत सोहब्बत से बचल रहीह। खूब मन लगा के पढ़, आ स्कल होख, इहे हमनी के कामना बा।

तोहार बाबूजी
देवानन्द

भेजेवाला
देवानन्द प्रसाद
ग्राम-सिपार,
जिला- बक्सर
पिन कोड- 841507

मिले,
रविप्रकाश
कमरा सं. 8
सी.वी.रमन छात्रावास,
रानीघाट, महेन्द्रू,पटना-6

मित्र के पासे चिट्ठी

मिन्टू छात्रावास
पटना कॉलेज, पटना-5
15.06.08

प्रिय आश्चर्य आनन्द,

नमस्ते।

तोहरा जान के खुशी होई कि 12वीं के परीक्षा में सब पेपर अच्छा गइल बा। आई.आई.टी. के भी परीक्षा देले बानी। पेपर बड़ा अच्छा गइल

बा। विश्वास बा कि 12वीं के परीक्षा में प्रथम त आइए जाइब, हो सकेला कि बोर्ड परीक्षा में भी कवनो स्थान मिल जाई, आ आई.आई.टी. परीक्षा में भी सफल हो जाइब। अगिला सप्ताह में हम घरे आइब। तू गाँवे पर रहिह। मेला देखे चलल जाई आ उहवाँ खूब मौज-मस्ती कइल जाई। चाचा-चाची के प्रणाम बोल दीह। छोटका के शुभाशीष बोलिह।

तोहार संघतिया
संजय

बधाई पत्र

नया गाँव, सारण
25.06.08

प्रिय रवि,

नमस्ते।

काल रोजगार समाचार पत्र मिलल। ओह में आईआईटी. परीक्षा के रिजल्ट निकलल रहे ओह में तोहार नाम आ रौल नंबर देख के पूरा गाँव झूम गइल। तोहरा बाबूजी के खुशी के ठेकाना ना रहल। गाँव के लोग कहे लगलन ई सफलता सिर्फ रवि के सफलता ना ह। ई पूरा गाँव के सफलता ह। रवि हमनी के गाँव के नाम रौशन क दिहलन आ हमनी के सीना चौड़ा क देहलन। ई शानदार सफलता पर हमरा साथे सभ संघतिया आ पूरा गाँव के बड़-बुजुरग के बधाई तू स्वीकार कर।

गाँवे जल्दी आव, सब तोहार स्वागत में आँख बिछवले बाड़न।

तोहार मित्र
सुरेन्द्र

नेवता (श्राद्ध)

मान्यवर, ...

नमस्ते ।

दु:ख के साथ सूचित करत बानी कि दिनांक 8.06.08 के सबेरे 6.00 बजे स्वर्गवास हमरा बाबा के हो गइल। 13 तारीख के ब्रह्मभोज बा। स्वर्गवासी बाबा के आत्मा के शांति के खातिर श्राद्धकर्म आ प्रार्थना सभा आयोजित बा। उपस्थित होखे के कृपा करीं।

विनीत

रामविलास आ

पूरा परिवार

नेवता (विवाह)

मान्यवर,

श्रीमान्/श्रीमती.....

परमपिता परमेश्वर के कृपा से हमरा बड़का बेटा रवीन्द्र के विआह तय हो गइल बा। बैसाख बदी अष्टमी दिनांक 28-4-08 दिन-सोमवार के तिलक आ बैसाख सुदी एकम दिनांक-06-05-08 दिन-मंगलवार के बिआह बा। बारात 06 तारीख के सबेरे बस से भागलपुर जाई। तिलक-विआह दूनो अवसर पर सपरिवार उपस्थित होके हमनी के दुआर के शोभा बढ़ाई।

दरस के अभिलाषी

देवेन्द्र प्रसाद आ पूरा परिवार

अर्जी-प्रार्थना पत्र

अर्जी भा प्रार्थना पत्र कवनो संस्थान भा कार्यालय के प्रमुख के नामे लिखल जाला। ओह में प्रार्थी आपन कवनो माँग रखेला भा कवनो शिकायत साफ-साफ लहजा में वाकिर विनम्रतापूर्वक रखेला। एकरो रूप चिट्ठी जइसन ही होला। अंतर अतने बा कि चिट्ठी में दहिना आँख खुलल रहेला-अर्जी में बॉया आँख खुल जाला।

अर्जी के आरंभ में जेकरा पास अर्जी लिखल जाला ओकर पदनाम आ पता बाँये किनारे लिखल जाला। ओकरा नीचे अर्जी के वजह लिखल जाला। विषय के बाद विनम्रतासूचक संबोधन महोदय/महोदया, महाशया महाशय लिखल जाला। ओकरा बाद आपन मॉग भा शिकायत के स्पष्ट रूप में लिखल जाला। अंतिम में मॉग भा शिकायत के पूर्ति खातिर आभार व्यक्त कइल जाला। अभिनिवेदन के स्थान पर राऊर आज्ञाकारी भा प्रार्थी भा विश्वासी लिख के आपन हस्ताक्षर कइल जाला आ पूरा पता तिथि के साथ अंकित कइल जाला।

कुछ उदाहरण

अपना मुहल्ला में पेयजल के आपूर्ति में उत्पन्न व्यवधान के दूर करे के संबंधा में संबंधित मंत्री के धयान आकर्षित करे खातिर संपादक के नाम चिट्ठी।

कंकड़बाग, पटना-20

10.05.08

सेवा में,

संपादक,

दैनिक जागरण,

पटना।

विषय- जलापूर्ति के समस्या के ले के पाठकनामा में प्रकाशित क के संबंधित मंत्री के ध्यान खींचे खातिर।

महाशय,

राउर लोकप्रिय अखबार दैनिक जागरण के माध्यम से पेयजल आपूर्ति मंत्री के धयान खींचल चाहत बानी कि हमरा मुहल्ला के पम्पहाउस के मोटर बराबर खराब भइल रहेला। सप्लाई के पाईप भी फाटल बा। जब पंप चले लागेला तब पाइप से पानी निकल-निकल के सड़क पर आ राह में फैल जाला। जल जमाव के समस्या खड़ा हो जाला। गंदगी फैल जाला। आवाजाही में परेशानी होला। घर-घर तक पानी भी पहुँच ना पावेला। मंत्री जी से ई मुहल्लावासी निवेदन करत बाड़ें कि पम्पहाउस के जीर्णोद्धार करवावल जाव, नया मोटर लगवावल जाव आ फूटल पाइप के स्थान पर नया पाइप लगवा के घर-घर तक पानी पहुँचवावल जाव। कृपा होई।

निवेदक

सब मुहल्लावासी

कंकड़बाग, पटना-20

गैरहाजिर रहला पर प्राचार्य के पास आवेदन पत्र

सेवा में,

प्राचार्य,

राजेन्द्र कॉलेज छपरा

विषय- गैरहाजिरी दण्ड माफ करे के बारे में।

महाशय,

विनयपूर्वक निवेदन बा कि 8.06.08 के हमार छोट बहिन के शादी रहल। हम घर के इकलौता क्रियाशील सदस्य बानी। शादी के सब इंतजाम हमरे करे के रहे। एही वजह से हम दिनांक 05.06.08 से 10.06.08 तक कॉलेज में ना आ सकली। गैरहाजिरी दण्ड से मुक्त करे के कृपा कइल जाए।

एकरा खातिर हम राऊर आभारी रहब।

राऊर आज्ञाकारी छात्र

रविन्द्र प्रसाद

कक्षा-11

क्रमांक-35

आई.एस-सी.

मूल प्रमाण पत्र निकलवावे खातिर बोर्ड ऑफिस के सचिव के पास अर्जी

सेवा में,

सचिव,

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति,

पटना-800001

विषय- मैट्रिक के मूल प्रमाण-पत्र निकलवावे के संबंध में।

महाशय,

निवेदन बा कि वर्ष 2007 में मैट्रिक परीक्षा दिहली रहलीं। अभी तक हमरा मूल प्रमाण पत्र नइखे मिलल। निर्गत करे के आदेश देबे के कृपा करीं।

एकरा खातिर हम राऊर आभारी रहब।

राऊर विश्वासभाजी

सुरेन्द्र कुमार

क्रमांक-107

पंजीयन- 1208/2000

केन्द्र कोड- 6107

विद्यालय-उच्च विद्यालय समरदह, सिवान

परीक्षा केन्द्र-उच्च विद्यालय नबीगंज, सिवान

तारीख-15.06.08

प्रकाशक के नामे किताब आ पुस्तक सूची मँगावे खातिर

सेवा में,

प्रबंधक,

अक्षर प्रकाशन

नई दिल्ली-02

विषयः- किताब आ पुस्तक सूची मँगावे खातिर।

महाशय,

निवेदन बा कि हम आई.एस-सी. के विद्यार्थी बानी। मेडिकल परीक्षा के तैयारी कर रहल बानी। आई.एस-सी आ मेडिकल परीक्षा से संबंधित हमरा किताब खरीदे के बा। रऊरा अपना इहाँ से प्रकाशित पुस्तकन के सूची नीचे लिखल पता पर भेज दीहीं। साथे एह बात के भी सूचना देहब कि पुस्तक खरीद पर कतना प्रतिशत छूट मिली।

एकरा खातिर राऊर कृतज्ञ रहब।

विश्वासभाजन

श्री नारायण

हमार पत्राचार के पता

श्री नारायण

द्वारा-श्री उमाकान्त यादव

मो+पो -घोघरडीहा

जिला- मधुबनी

बिहार।

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प चुनीं।

(क) पत्र क प्रकार के होला

(अ) एगो (ब) दूगो (स) तीन गो (द) चार गो।

(ख) पत्र के अंग होला

(अ) एगो (ब) दूगो (स) तीन गो (द) चार गो।

(ग) पत्र में संबोधन बदलेला

(अ) स्थान के अनुसार (ब) लिखे-पावेवाला के संबंध के अनुसार
(स) लिखेवाला के विचार के अनुसार

(द) पावेवाला के पद के अनुसार।

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(संस्थान भा कार्यालय, अभिनिवेदन' भा 'समापन, व्यक्तिगत पत्र, व्यावसायिक पत्र दहिना, बाँया, दूत)

(क) सामाजिक भा व्यक्तिगत पत्र कवनो संबंधी के इहवाँ लिखल जा ला जबकि ..... संस्थान के प्रमुख के पासे लिखल जा ला।

(ख) चिट्ठी के चार अंग मानल जाला। सिर के 'आरंभ', गरदन के 'अभिवादन', धड़ के 'विचार' आउर पैर के .....कहल जा सके ला।

(ग) अंत भा समापन में पत्र भा अर्जी के अंत में .....कोना में पत्र पावेवाला के साथ आपन संबंध के विनम्रता पूर्वक उल्लेख करे के चाहीं।

(घ) चिट्ठी के हाड़-मांस विहीन जीवंत ..... कहल जाला।

(ङ) अर्जी भा प्रार्थना पत्र कवनो .....के प्रमुख के नामे लिखल ला।

(च) पाती के आरंभ में जवना स्थान से चिट्ठी लिखल जा रहल बा .....कोना में ओह स्थान के नाम आ ओकरा नीचे तारीख लिखल जाला।

3. नपल-तुलल शब्द में उतर दीं।

(क) चिट्ठी के परिभाषा लिखीं।

(ख) चिट्ठी आ अर्जी में का अंतर बा।

(ग) चिट्ठी के कगो आ कवन कवन अंग बा। ओहनी के बारे में संक्षेप में लिखीं।

(घ) चिट्ठी के का काम ह?

(ङ) प्रभावशाली चिट्ठी में कवन--कवन गुण होखे के चाहीं।

क्रियाभ्यास

(क) किसिम-किसिम के चिट्ठी आ अर्जी के संग्रह करीं।